

आत्मनिर्भर भारत: स्वदेशी और एकात्म मानववाद राजनीतिक दर्शन के परिप्रेक्ष्य में

राहुल कुमार,

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, दिल्ली विश्वविद्यालय

शोध सारांश

आत्मनिर्भर भारत कार्यक्रम हमारे वर्तमान भारतवर्ष में केंद्रीय सरकार की एक सबसे महत्वपूर्ण नीतिगत पहल है। जिसका मुख्य लक्ष्य देश की आर्थिक, बौद्धिक, तकनीकी और औद्योगिक क्षमताओं को मजबूत बनाना है। इसे अधिकतर एक सामान्य आर्थिक नीति के रूप में देखा जाता है, किंतु इसके पीछे गहरे राजनीतिक और दार्शनिक आयाम भी निहित हैं। इस लेख के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा का राष्ट्रवादी, गांधीवादी स्वदेशी और दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद और उनके विचारों को समाहित करते हुए हमारी केंद्रीय सरकार भारतीय जनता पार्टी के विभिन्न नीतियों के संदर्भ में विश्लेषण करता है। आत्मनिर्भरता का तर्क है केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता का कार्यक्रम नहीं, बल्कि राष्ट्र की क्षमता निर्माण, सांस्कृतिक आत्मविश्वास, बौद्धिक विकास और एक समग्र भारत विकास की एक व्यापक राजनीतिक दार्शनिक परियोजना है।

मुख्य शब्द : आत्मनिर्भर भारत, राष्ट्रवाद, स्वदेशी, एकात्म मानववाद, राजनीतिक दर्शन, विकास।

प्रस्तावना

आत्मनिर्भरता का विचार अगर हम देखे तो हमारे भारतीय समाज में बहुत पहले से विद्यमान है। लेकिन अगर हम हाल फिलहाल में देखे तो आत्मनिर्भरता का विचार कोविड-19 महामारी के समय लेकर आजतक बहुत ही अधिक प्रभावशाली हुआ है। इस महामारी ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में आई बाधाओं से लगभग पूरे विश्व को अपने मुख्यतया आर्थिक निर्भरता पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर कर दिया। भारत में इसी संदर्भ में आत्मनिर्भर भारत अभियान की घोषणा भारत सरकार द्वारा 13 मई 2020 को भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में शुरू किया गया आत्मनिर्भर भारत अभियान है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी जी ने महामारी के समय में देश का समर्थन करने के लिए सहायता के रूप में लगभग 20 लाख करोड़ रूपए के आर्थिक मदद की घोषणा की थी। यह घोषणा मुख्यतया पांच घटकों - **अर्थव्यवस्था, अवसंरचना, प्रणाली, जीवंत जनसांख्यिकी और मांग** पर आधारित है। जिसका उद्देश्य हमारे दार्शनिक विचारकों जैसे कि महात्मा गांधी, पंडित दीन दयाल उपाध्याय आदि के विचारों पर आधारित घरेलू उत्पादन, नवाचार, उद्यमिता तथा स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहित करना था। हालांकि अगर

हम देखे तो इसे सार्वजनिक विमर्श में मुख्यतः आर्थिक नीति के रूप में वर्णित किया गया, किंतु इसके वास्तविकता में इसके वैचारिक आधार राजनीतिक दर्शन की विभिन्न परंपराओं से जुड़े हुए हैं।

इस लेख के माध्यम से हम सब प्रश्न की जांच करने की कोशिश करेंगे कि आत्मनिर्भर भारत के इस विचार को राजनीतिक दर्शन की दृष्टि से कैसे समझा जा सकता है। और इसके प्रमुख वैचारिक स्रोत कौन से हो सकते हैं।

आत्मनिर्भरता और राष्ट्रवाद

राष्ट्रवाद को अलग अलग विचारकों ने अलग अलग तरीके से परिभाषित किया है। लेकिन राष्ट्रवाद को अगर हम देखें तो राष्ट्रवाद का विचार केवल राजनीतिक स्वतंत्रता या राजनीतिक एकजुटता का ही विचार नहीं है, बल्कि यह आर्थिक और सांस्कृतिक स्वायत्तता से भी जुड़ा हुआ है। **बेनेडिक्ट एंडरसन** (2006) राष्ट्र को एक कल्पित समुदाय के रूप में देखते हैं। जबकि **अर्नेस्ट गेल्लर** (1983) राष्ट्रवाद को आधुनिक समाजों की एक सुसंगठित राजनीतिक शक्ति के रूप में देखते हैं। इस दृष्टिकोण से आत्मनिर्भर भारत आर्थिक राष्ट्रवाद की एक समकालीन अभिव्यक्ति के रूप में प्रतीत होता है।

आत्मनिर्भरता की अवधारणा राष्ट्रीय सकल संसाधनों, स्थानीय, राष्ट्रीय उत्पादन और घरेलू उद्योगों को मजबूती प्रदान करने पर बल देता है। जिसका उद्देश्य न की भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था से अलग करना, बल्कि उसे अधिक प्रभावशाली और प्रतिस्पर्धी बनाना है। आत्मनिर्भर भारत का विचार भारत की अपनी पहचान और आर्थिक क्षेत्र में कम निर्भरता पर आधारित है। इस से भारत अपने युवा शक्ति की संगठित और संवर्धित करने का प्रयास कर रहा है। आत्मनिर्भर भारत का सपना प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी के प्रमुख कार्यों में से एक है और यह भारत के हर एक दृष्टिकोण को समाहित कर रहा है। फिर वो चाहे कृषि का क्षेत्र हो चाहे व्यवसाय, का उद्यम का ये उत्पादन का हर एक क्षेत्र आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। और स्टार्टअप जैसे सुविधाओं से हमारे युवाओं और नागरिकों को काम के लिए इधर उधर भटकना नहीं पड़ पड़ रहा है। इस प्रकार हम देखे तो आत्मनिर्भर भारत आर्थिक राष्ट्रवाद और वैश्विक सहभागिता के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयत्न करता है।

आत्मनिर्भर भारत और गांधीवादी स्वदेशी

महात्मा गांधी ने अपनी पुस्तक **हिंद स्वराज स्वराज** और आत्मनिर्भरता का जो विचार प्रस्तुत किया है। इतना प्रभावशाली विचार शायद ही अन्यत्र कहीं और हमें देखने को मिले। कोविड महामारी के समय हर कोई गांधी जी के विचार से प्रभावित और उनके विचारों की प्रासंगिकता के गुणगान गाता हुआ दिखाई पड़ रहा था। गांधी जी ने हिंद स्वराज में ना केवल राजनीतिक स्वराज की बात कही अपितु उन्होंने आर्थिक और सामाजिक मामलों में भी आत्मनिर्भरता को परिभाषित किया। हिंद स्वराज में स्वदेशी के विचार को न केवल आर्थिक नीति, वरन नैतिक और राजनीतिक सिद्धांत के रूप में भी प्रस्तुत किया। महात्मा गांधी जी

के अनुसार ग्रामीण या लघु उत्पादन और स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति सामाजिक न्याय और आत्मसम्मान दोनों के लिए आवश्यक है।

ग्राम स्वराज: गांधीजी का मान ना था, कि हमारे देश भारत की आत्मा गांवों में बसती है। इसीलिए वो कहते थे कि गांवों को अपनी बुनियादी जरूरतों (भोजन, वस्त्र, जल) के लिए आत्मनिर्भर होना चाहिए। जिसके लिए उन्होंने गांव के लोगों से **हस्त शिल्प** को अपनाने पर अधिक जोर दिया। और आर्थिक मामलों में आत्मनिर्भर बनने पर अधिक बल दिया।

कुटीर उद्योग और खादी के प्रयोग पर गांधी जी ने दल दिया और बड़े पैमाने के औद्योगीकरण के बजाय, गांधीजी ने चरखे और हथकरघा जैसे छोटे छोटे साधनों को बढ़ावा देने पर बल दिया। जिससे हर हाथ को काम मिल सके। **श्रम की गरिमा** को गांधी जी ने अपने दर्शन में बहुत अधिक महत्व दिया है। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति से शारीरिक श्रम करने और अपनी आजीविका स्वयं कमाने की वकालत की। सीमित उपभोग पर गांधी से बहुत अधिक प्रभावशाली विचार प्रस्तुत करते हैं जो कि उनके विचार समाजवादी और साम्यवादी विचार धारा से प्रभावित हुए प्रतीत होते हैं। उनका मूल मंत्र था कि प्रकृति के पास सभी की जरूरतों के लिए पर्याप्त है, लेकिन लालच के लिए नहीं। इस सिद्धांत के तहत सादा जीवन और पर्यावरण के अनुकूल अर्थव्यवस्था पर जोर दिया गया।

अगर हम देखें तो आत्मनिर्भर भारत की कई नीतियाँ, जैसे स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहन, वोकल फॉर लोकल और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाना, गांधीवादी स्वदेशी अवधारणा की आधुनिक अभिव्यक्ति के रूप में देखा जा सकती हैं। अगर हम दोनों में थोड़ा अंतर करते हैं तो देखते हैं कि गांधी जी का मॉडल विकेंद्रीकरण और ग्राम-केंद्रित था। जबकि वर्तमान आत्मनिर्भर भारत का कार्यक्रम आधुनिक तकनीकी, उद्योग और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को भी साथ लेकर चलता है। इस प्रकार दोनों विचारधाराओं के बीच समानताओं के साथ-साथ कुछ महत्वपूर्ण समानताएं भी देखने की मिलती हैं।

समग्र विकास और एकात्म मानववाद

इसी प्रकार पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद, समग्र विकास और आत्मनिर्भर भारत के विचार वर्तमान समय में अत्यधिक प्रासंगिक हैं। उपाध्याय जी का यह दर्शन व्यक्ति, समाज, प्रकृति और ईश्वर के बीच सामंजस्य बनाते हुए एक ऐसे स्वदेशी और समावेशी विकास की वकालत करता है, जो आधुनिक समस्याओं का स्थायी और सुव्यस्थित समाधान प्रस्तुत करता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद की अवधारणा भारतीय राजनीतिक चिंतन की एक महत्वपूर्ण विचारधारा है। दीनदयाल जी का समग्र विकास का विचार भी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र तीनों के मध्य संतुलन स्थापित करने पर अधिक बल देता है। और यह विचार तीनों के समग्र विकास पर अपना ध्यान केंद्रित करता है। इस विचार के अनुसार विकास का लक्ष्य केवल आर्थिक वृद्धि ही नहीं, बल्कि मनुष्य, समाज और राष्ट्र के बहुआयामी विकास को सुनिश्चित करना होना चाहिए।

सबका साथ - सबका विकास

यह कार्यक्रम वर्तमान भारत सरकार भारतीय जनता पार्टी द्वारा शुरू किया गया। जिसके द्वारा पंडित उपाध्याय जी के विचारों पर चलकर एक विकसित और न्याय पूर्ण भारत के सपने को पूरा करने के लिए मिलकर काम करें। और एक ऐसे

आत्मनिर्भर भारत का निर्माण हो सके जहां पर हमारे समाज के सबसे निचले तबके के व्यक्ति का कल्याण और विकास हो सके। उपाध्याय जी चहुमुखी विकास और सबके विकास के पक्षधर थे। इन्हीं के नक्शे कदम पर चलती हुई जनसंघ और फिर उसकी उत्तराधिकारी पार्टी भारतीय जनता पार्टी आज उपाध्याय जी के जीवन और दर्शन के प्रेरणा स्रोत पर चलते हुए उनके विचारों की केंद्र बिंदु बन गई है। सबका साथ सबका विकास के विचार के लक्ष्य को साकार बनाने के लिए उन्होंने सबसे आर्थिक असमानता, भेदभाव, और विषमताओं को समाप्त करना उनका प्रथम लक्ष्य था, और उनका मान न था कि बिना इन कुरीतियों को खत्म किए सबका साथ सबका विकास नहीं किया जा सकता है। इसके साथ ही इस विकास के विचार के साथ साथ ही मनुष्य की स्वतंत्रता, समानता और गरिमापूर्ण जीवन जीने की भावना भी निहित है।

अंत्योदय पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का अंत्योदय का विचार आधुनिक समय में बहुत ही प्रासंगिक है, जो कि समाज में सबसे निचले स्तर पर रह रहे व्यक्ति के विकास को समाहित करता है। यह उपाध्याय जी के एकात्म मानववाद के विचार पर आधारित है और इस विचार का अभिन्न अंग भी है। जो कि गरीबों के कल्याण हेतु पूर्ण मनोवेग से काम करने पर आधारित है। उनके अनुसार वे लोग जिनके पास जिनके पास रोजी रोटी का सवाल है, जिनके पास न रहने के लिए मकान है, ना खाने के लिए रोटी है, न तन ढकने के लिए कपड़ा है, उनको सुखी और संपन्न बनाना हमारा प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए। इसी लक्ष्य को पूरा करने के लिए उन्होंने आर्थिक लोकतंत्र का विचार दिया। उनका मान न था कि की जिस प्रकार राजनीतिक लोकतंत्र में प्रत्येक व्यक्ति को वोट डालने का अधिकार होता है, उसी प्रकार लोगों को काम करने का भी अधिकार मिलना चाहिए। उनको सक्षम बनाना चाहिए ताकि वो अपनी जीविका और जरूरतों को पूरा कर सकें। आज वर्तमान समय में भारतीय जनता पार्टी उन्हीं के विचारों को पूरा करने के लिए आत्मनिर्भर भारत की ओर अपनी नीतियों और निर्णय को लेकर अग्रसर प्रतीत होती है। जहां पर न कोई भूखा रहे और न किसी के ऊपर छत का अभाव रहे।

अगर हम देखे तो वर्तमान सरकार ने जहां पर देश में आर्थिक सशक्तिकरण के इन माप दंडों को प्राप्त करने के लिए, जहां एक ओर कानून के द्वारा व्यवस्था की पारदर्शिता को उत्तरदारी बनाया है, वहीं अनेक योजनाओं के माध्यम से जैसे दीन दयाल ग्राम ज्योति योजना, उज्ज्वला योजना, स्वच्छता मिशन में जन सहभागिता से देश में सकारात्मक वातावरण का निर्माण हो रहा है। गरीब और वंचित वर्ग के आर्थिक समावेशन के लिए जन धन अभियान और सभी वर्गों के लिए बीमा से सामाजिक सुरक्षा की योजनाएं अंत्योदय की दिशा में मील का पत्थर साबित हो रही है। प्रत्येक के लिए आवास और हर हाथ के लिए काम, सभी खेत के लिए पानी के लक्ष्य को पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के विचारों के अनुरूप उनको वर्तमान सरकार द्वारा मूर्त रूप प्रदान किया जा रहा है।

स्किल इंडिया मिशन : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों से प्रेरित होकर सरकार ने इस योजना की शुरुआत जुलाई 2015 में की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य युवाओं को कौशल विकास के माध्यम से आजीविका के विभिन्न अवसर प्रदान करके उनको आत्मनिर्भर बनाना और गरीबी को कम से कम करना है। और इसके माध्यम से शहरी और ग्रामीण के बीच के अंतर को कम से कम करना है।

मेक इन इंडिया : इस योजना की शुरुआत 25 दिसंबर 2014 को शुरू हुई। इसके माध्यम से राष्ट्रीय कंपनियों को अपने उत्पादों के निर्माण के लिए अधिक से अधिक प्रोत्साहित करना है, जिस से रोजगार सृजन और कौशल वृद्धि अधिक से अधिक हो सके। और इस योजना का मुख्य लक्ष्य भारत को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनाना, रोजगार सृजन करना और देश को आत्मनिर्भर बनाना है।

स्टार्टअप इंडिया : इस योजना की शुरुआत 5 जनवरी 2016 को की गई। इस योजना के माध्यम से नए उद्यमियों को अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए 10 लाख से 1 करोड़ रुपये तक का ऋण सुनिश्चित किया गया है। इस योजना के माध्यम से उस वर्ग के विकास और आत्मनिर्भर बनाने पर अधिक बल दिया गया है जो अभी तक लंबे समय से हाशिए पर था।

दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना: इस योजना का प्रारंभ 20 नवंबर 2014 को हुई इस योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण भारत के हर गांव को बिजली से रोशन करना और कृषि क्षेत्र में बिजली की निरंतर आपूर्ति को सुनिश्चित करना है। ताकि किसानों की वर्षा पर निर्भरता को कम किया जा सके और उनके उत्पादन में वृद्धि की जा सके।

दीनदयाल ग्रामोद्योग रोजगार योजना: ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी की समस्या और गांवों से शहरों की तरफ पलायन की कम कारण के लिए और शिक्षित युवाओं को गांवों में ही रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए यह योजना कार्य कर रही है। एक जनपद एक उत्पाद योजना के अंतर्गत स्थापित उद्योगों को नवीन तकनीक से जोड़ने और उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने के निहितार्थ प्रवेश के ग्रामीण क्षेत्र के व्यक्तिगत उद्यमियों को प्रेरित करने के उद्देश्य से पंडित दीनदयाल ग्रामोद्योग योजना की संरचना की गई है।

इसी प्रकार आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को पूरा करने के लिए अन्य योजनाएं जैसे **पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्वनियोजन योजना**, **पंडित दीनदयाल विकलांग पुनर्वास योजना**, **पंडित दीनदयाल स्वमेव जयते योजना**, **पंडित दीनदयाल अंत्योदय योजना**, **प्रधानमंत्री वय वंदना योजना**, **आत्मनिर्भर भारत रोजगार योजना**, **आपरेशन ग्रीन योजना**, **मत्स्य संपदा योजना**, **आयुष्मान भारत योजना**, **प्रधानमंत्री सौभाग्य योजना** आदि विभिन्न प्रकार की योजनाएं वर्तमान सरकार भारतीय जनता पार्टी द्वारा संचालित की जा रही है। जिसके माध्यम से दीन दयाल उपाध्याय जी के विचारों को साकार करते हुए आत्मनिर्भर भारत का लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

कार्यक्रम में मुख्यतया कौशल विकास, रोजगार सृजन, उद्यमिता और सामाजिक सहभागिता पर बल दिया गया। जो कि पंडित दीनदयाल की एकात्म मानववाद की अवधारणाओं के समरूप प्रतीत होता है। यह विचार आर्थिक विकास को राष्ट्रीय हितों और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ जोड़ने का प्रयत्न करता

है। इसलिए आत्मनिर्भर भारत को केवल आर्थिक कार्यक्रम न मानकर पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के समग्र विकास की योजना के रूप में भी देखा जा सकता है।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

हम देखे तो वर्तमान समय में आत्मनिर्भर भारत के अनेक सकारात्मक पहलू हैं और इसकी बहुत अधिक प्रासंगिकता भी है, किंतु इसके समक्ष कुछ चुनौतियाँ भी हमें देखने को मिलती हैं। जैसे,

1. वैश्वीकरण के वर्तमान युग में पूरी तरह आत्मनिर्भरता व्यावहारिक हो नहीं सकती है। आधुनिक अर्थव्यवस्थाएँ परस्पर एक दूसरे पर आधारित हैं। तथा वैश्विक व्यापार से पूर्ण दूरी आर्थिक विकास को सीमित कर सकती है।
2. अगर आत्मनिर्भरता की अवधारणा अत्यधिक संरक्षणवाद का रूप ग्रहण कर लेती है तो इससे आर्थिक जगत में प्रतिस्पर्धा और नवाचार प्रभावित हो सकते हैं। आर्थिक जगत का हमें इतिहास यह दिखाने का प्रयत्न करता है कि अगर हम दीर्घकालीन विकास करना है तो घरेलू क्षमता निर्माण के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय सहयोग भी बहुत आवश्यक है।
3. सूक्ष्म, लघु और मध्यम और कुटीर उद्यमों (MSMEs) के सामने पूंजी, तकनीकी और बाज़ार तक पहुँच जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। जिसके लिए केवल नीतिगत घोषणाएँ पर्याप्त नहीं हैं। उनके प्रभावी क्रियान्वयन की भी अति आवश्यकता है।

आत्मनिर्भर भारत ने विकास संबंधी विमर्श को राष्ट्रीय क्षमता निर्माण, तकनीकी नवाचार और स्थानीय उत्पादन की दिशा में पुनर्स्थापित किया है। इस दृष्टि से यह भारत की विकास रणनीति में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का संकेत देता है।

निष्कर्ष

हम देखते हैं कि आत्मनिर्भर भारत कार्यक्रम को केवल आर्थिक कार्यक्रम के रूप में समझना इसकी वैचारिक व्यापकता को बहुत सीमित कर देता है। जबकि अगर हम राजनीतिक दर्शन की दृष्टि से देखे तो यह, गांधीवादी स्वदेशी, राष्ट्रवाद और एकात्म मानववाद जैसी परंपराओं से प्रेरित एक व्यापक परियोजना प्रतीत है। जिसका उद्देश्य आत्मकेंद्रित और पूर्ण आत्मनिर्भर भारत का निर्माण नहीं, वरन एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण है जो अपनी क्षमताओं, संसाधनों और नवाचार के बल पर वैश्विक व्यवस्था में प्रभावी भूमिका निभा सके। और आत्मनिर्भर भारत की सफलता काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती है, कि वह घरेलू क्षमता निर्माण, स्थानीय स्वरोजगार और वैश्विक सहभागिता के बीच कितना संतुलित संबंध स्थापित कर पाता है।

संदर्भ

1. Anderson, B. (2006). *Imagined Communities: Reflections on the Origin and Spread of Nationalism*. Gandhi, M. K. (1938). *Hind Swaraj*. Navajivan Publishing House.
2. Gellner, E. (1983). *Nations and Nationalism*. Cornell University Press.
3. Upadhyaya, D. (1965). *Integral Humanism*. Suruchi publication.
4. Government of India. (2020). *Atmanirbhar Bharat Abhiyan: Economic Package and Policy Measures*. New Delhi.
5. NITI Aayog. (2020). *Strategy and Policy Initiatives for Atmanirbhar Bharat*. New Delhi.
6. Gandhi, M. K. (1958). *The Collected Works of Mahatma Gandhi (Vols. 1–100)*. Publications Division, Government of India.
7. Deendayal Upadhyaya Upadhyaya, D. (1965). *Integral Humanism*. Suruchi Prakashan.
8. Deendayal Upadhyaya Upadhyaya, D. (2002). *Political Diary*. Suruchi Prakashan.
9. Bipan Chandra Chandra, B, Mukherjee, M. Mukherjee, A., Panikkar, K. N., Mahajan, S., & Chandra, S. (1989). *India's Struggle for Independence*. Penguin Books.
10. NITI Aayog. (2020). *Atmanirbhar Bharat: Policy Initiatives and Strategic Reforms*. Government of India.
11. Government of India. (2020). *Atmanirbhar Bharat Abhiyan Economic Package*. Ministry of Finance, Government of India.
12. Singh, S. (2026). *Relevance of Deen Dayal Upadhyaya's Integral Humanism in the Context of Viksit Bharat (2047)*. *Journal of Social and Economic Development*. Sage Journals.
13. Sepeya, R. S. (2021). *Pt. Deendayal Upadhyaya's Integral Humanism*, Swarajya and Surajya. *International Journal of Recent Advances in Multidisciplinary topics*, 2(6) journals.ijramt.com
14. Sharma, S. K. (2025). *Re-envisioning Public Administration in India through Deendayal Upadhyaya's Integral Humanism: A Normative, Ethical and Decentralized Governance Framework*.